राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
Choice Based Credit Systerm- (CBCS)
सत्र 2018–19

Class	:	BPA I[st] Year
Subject	:	Kathak
Paper	:	I[st]
Title of paper	:	भारतीय नृत्य का इतिहास, विकास एवं प्रयोगात्मक सिद्धांत (Bhartiya nratya ka itihas, vikas evam prayogathmak sidhhant)
Compulsory/Optical	:	Compulsory
Max. Marks	:	(Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1st	पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन – 1. ततकार, हस्तक, ठाठ, ताल, ठेका, मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग। 2. कथक नृत्य शैली का परिचय।	
Unit- II[nd]	तीन ताल में निम्नानुसार नृत्य :– 1. पद संचालन, हस्तक संचालन, ठाठ, एक उठान, एक आमद, तीन सादा तोड़े, एक परन, एक तिहाई। 2. चक्करदार परन अथवा तोड़े, एक कवित्त एवं तत्कार की ठाह, दुगुन, चौगुन।	
Unit- III[rd]	1. ताण्डव एवं लास्य नृत्य का सविस्तार वर्णन। 2. नटन भेदों की जानकारी।	
Unit- IV[th]	1. गत निकास– मुकुट, मुरली व मटकी। 2. गतभाव– पनघट (पनिहारिन)	
Unit- V[th]	1. नृत्य का इतिहास– प्राचीन काल से मध्य काल तक। 2. जीवनी एवं कथक नृत्य में योगदान: पं. बिन्दादीन महाराज, पं. कालका प्रसाद, पं. अच्छन महाराज, पं. लच्छू महाराज, पं. शम्भू महाराज एवं पं. बिरजू महाराज।	

20-02-19

(3)

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम

Choice Based Credit Systerm- (CBCS)

सत्र 2018–19

Class : BPA I[st] Year
Subject : Kathak
Paper : 2[nd]
Title of paper : शाब्दिक परम्परा (Textual Tradition)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1_{st}	1. गणेशवंदना अथवा गुरू वंदना पर भाव प्रदर्शन। 2. आचार्य नन्दीकेशवर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार (1–16) असंयुक्त हस्तमुद्राओं का मूल–श्लोक सहित अध्ययन।	
Unit- II[nd]	1. अभिनय दर्पण में वर्णित असंयुक्त हस्तों का श्लोक सहित अध्ययन एवं क्रमानुसार (1 से 16) तक हस्तमुद्राओं का चित्रांकन व विनियोग सहित वर्णन 2. किसी भी प्रदेश के एक लोक नृत्य का अध्ययन।	
Unit- III[rd]	1. आचार्य नन्दीकेशवर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार ग्रीवा भेद शिरोभेद का अध्ययन। 2. अभिनय किसे कहते हैं।	
Unit- IV[th]	1. प्रायोगिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत तीनताल (16 मात्रा), दादरा, कहरवा सीखे गये तालों के ठेकों को एकगुन, दुगुन एवं चौगुन में लिपिबद्ध करना। 2. समस्त सीखे गये बोलों को लिपिबद्ध करने का अभ्यास।	
Unit- V[th]	1. त्रिताल (16 मात्रा), कहरवा (8 मात्रा), दादरा (6 मात्रा) तालों की ठाह, दुगुन, चौगुन सहित पढ़न्त करने की क्षमता तथा प्रायोगिक में सीखे गये सभी बोलों की पढ़न्त करने की क्षमता। 2. त्रिताल में एक आमद लिपिबद्ध कीजिए।	

नोटः– प्रथम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल – तीनताल (16 मात्रा) दादरा, कहरवा।

संदर्भित पुस्तकेंः–

1. भारतीय संस्कृति में कथक परपंरा (डॉ. मांडवी सिंह)
2. कथक दर्पण (स्व. श्री तीरथराम आजाद)
3. रायगढ़ में कथक (श्री कार्तिकराम जी)
4. कथक नृत्य शिक्षा भाग एक एवं दो (डॉ. पुरू दाधीच)
5. कथक कल्पद्रुम (डॉ. चेतना ज्योतिषी व्यौहार)
6. संगीत दर्पण (श्री दामोदर पंडित)
7. अभिनय दर्पण (श्री वाचस्पति गैरोला)

20-02-19

8. नटवरी नृत्यमाला (गुरू विक्रम)
9. कथक नृत्य (श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग)
10. कथक नर्तन (डॉ. विधि नागर)
11. कथक मध्यमा (डॉ. भगवानदास माणिक)
12. कथक नृत्य शिक्षा भाग–1 (डॉ. पुरू दाधीच)

प्रायोगिक– प्रदर्शन एवं मौखिक

Unit- 1st	तीन ताल में निम्नानुसार नृत्य :– पद संचालन, हस्तक संचालन, ठाठ, एक उठान, एक आमद, तीन सादा तोड़े, एक परन, एक तिहाई, एक चक्करदार परन अथवा तोड़े, एक कवित्त एवं तत्कार की ठाह, दुगुन, चौगुन।	
Unit- IInd	2. गत निकास– मुकुट, मुरली व मटकी। 3. गतभाव– पनघट (पनिहारिन)	
Unit- IIIrd	1. गणेशवंदना अथवा गुरू वंदना पर भाव प्रदर्शन। 2. आचार्य नन्दीकेशवर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार (1–16) हस्तमुद्राओं का मूल–श्लोक सहित प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- IVth	1. किसी भी प्रदेश के एक लोक नृत्य पर प्रदर्शन। 2. आचार्य नन्दीकेशवर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार ग्रीवा भेद शिरोभेद का प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- Vth	त्रिताल (16 मात्रा), कहरवा (8 मात्रा), दादरा (6 मात्रा) तालों की ठाह, दुगुन, चौगुन सहित पढ़न्त करने की क्षमता तथा प्रायोगिक में सीखे गये सभी बोलों की पढ़न्त करने की क्षमता।	

20-2-19

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम

Choice Based Credit Systerm- (CBCS)

सत्र 2018–19

Class : BPA II_{nd} Year
Subject : Kathak Dance
Paper : I^{st}
Title of paper : भारतीय नृत्य का इतिहास, विकास एवं प्रयोगात्मक सिद्धांत (Bhartiya nratya ka itihas, vikas evam prayogathmak sidhhant)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1_{st}	1. मध्यकाल से आधुनिक काल तक भारतीय नृत्य कला का इतिहास। 2. शास्त्रीय नृत्य शैली भरतनाट्यम का परिचय।	
Unit- II^{nd}	1. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार असंयुक्त हस्तों का (17 से 28) तक श्लोक एवं विनियोग सहित ज्ञान। 2. अभिनय दर्पण के विषय वस्तु का परिचयात्मक ज्ञान।	
Unit- III^{rd}	1. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार में वर्णित दृष्टि भेदों का श्लोक सहित अध्ययन। 2. अभिनय दर्पण के अनुसार पात्र लक्षण (गुण एवं दोष)	
Unit- IV^{th}	1. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञानः– आमद, सलामी, तोड़ा, टुकड़ा, परन, कवित्त, चक्करदार परन। 2. तीन ताल, एक ताल (12 मात्रा) तथा चौताल (12 मात्रा) की ठाह, दुगुन, चौगुन लिपिबद्ध करने की क्षमता तथा उनमें सीखे गये बोलों की लिपिबद्ध करने की क्षमता।	
Unit- V^{th}	1. जीवनी एवं कथक नृत्य में योगदानः– पं. कार्तिक राम, पं. कल्याण दास, पं. फिरतु दास, पं. रामलाल, पं. बर्मनलाल। 2. कथक नृत्य के प्रस्तुतिक्रम का विवरण	

नोटः– प्रथम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल – तीनताल (16 मात्रा) कहरवा (8 मात्रा), दादरा (6 मात्रा)।

20-02-19

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) (5)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
Choice Based Credit Systerm- (CBCS)
सत्र 2018–19

Class : BPA II_{nd} Year
Subject : Kathak Dance
Paper : 2^{nd}
Title of paper : शाब्दिक परम्परा (Textual Tradition)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1_{st}	1. कथक नृत्य के जयपुर व लखनऊ की शैलीगत विशेषताऐं एवं सम्बंधित नृत्यकारों के बारे में जानकारी। जीवनीयाँ एवं कथक नृत्य में योगदान– पं. सुखदेव महाराज, पं. जानकी प्रसाद। 2. मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य शैली का परिचयात्मक ज्ञान।	
Unit- II^{nd}	3. अभिनय दर्पणानुसार असंयुक्त हस्तमुद्राओं का श्लोक सहित अध्ययन क्रमानुसार (1 से 16) तक हस्तमुद्राओं का चित्रांकन व विनियोग सहित वर्णन 4. अभिनय की परिभाषा एवं प्रकारों का संक्षिप्त अध्ययन।	
Unit- III^{rd}	1. कथक नृत्य में ताल की महत्ता। 2. कथक नृत्य में चारों प्रकार के अभिनय का प्रयोग।	
Unit- IV^{th}	3. त्रिताल (16 मात्रा), कहरवा (8 मात्रा), दादरा (6 मात्रा) ठेकों की ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन लिपिबद्ध करना। 4. त्रिताल में समस्त सीखे गये बोलों का लिपिबद्ध करना।	
Unit- V^{th}	1. एकतला (12 मात्रा) व चौताल (12 मात्रा) की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन लिपिबद्ध करने की क्षमता। 2. प्रायोगिक में सीखे गये समस्त बोलों को लिपिबद्ध करने की क्षमता।	

नोटः– प्रथम सेमेस्टर के ताल – त्रिताल (16 मात्रा), कहरवा (8 मात्रा), दादरा (6 मात्रा)

संदर्भित पुस्तकें:–

1. भारतीय संस्कृति में कथक परपंरा (डॉ. मांडवी सिंह)
2. कथक दर्पण (स्व. श्री तीरथराम आजाद)
3. रायगढ़ में कथक (श्री कार्तिकराम जी)
4. कथक नृत्य शिक्षा भाग एक एवं दो (डॉ. पुरू दाधीच)
5. कथक कल्पद्रुम (डॉ. चेतना ज्योतिषी व्यौहार)
6. संगीत दर्पण (श्री दामोदर पंडित)
7. अभिनय दर्पण (श्री वाचस्पति गैरोला)
8. नटवरी नृत्यमाला (गुरू विक्रम)

20-02-19

9. कथक नृत्य (श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग)
10. कथक नर्तन (डॉ. विधि नागर)
11. कथक मध्यमा (डॉ. भगवानदास माणिक)
12. कथक नृत्य शिक्षा भाग–1 (डॉ. पुरू दाधीच)

प्रायोगिक– प्रदर्शन एवं मौखिक

Unit- 1_{st}	1. शिव वंदना पर भाव प्रदर्शन। 2. तीन ताल में निम्नानुसार नृत्यः– ठाठ, एक उठान अथवा एक आमद, एक तोड़े, एक सादा परन, एक चक्करदार तोड एवं एक चक्करदार परन।	
Unit- II^{nd}	1. गत निकास– मटकी एवं घूंघट 2. गतभाव– होली	
Unit- III^{rd}	1. आचार्य नन्दीकेशवर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार दृष्टि भेदों का श्लोक सहित प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- IV^{th}	3. किसी भी प्रदेश के एक लोक नृत्य पर प्रदर्शन। 4. आचार्य नन्दीकेशवर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार ग्रीवा भेद शिरोभेद का प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- V^{th}	एक ताल –12 अथवा चौताल–12 में निम्नानुसार नृत्यः– पद संचालन तत्कार की एकगुन, दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं प्रायोगिक में सीखे गये सभी बोल पढन्त करने की क्षमता।	

नोटः– प्रथम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल–तीनताल (16 मात्रा), कहरवा (8 मात्रा), दादरा (6 मात्रा)

द्वितीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल–एकताल (12 मात्रा) तथा चौताल (12 मात्रा) पूर्व कक्षा में सीखी गई ताल एवं बंदिशों की पुनरावृत्ति।

20-02-19

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम

Choice Based Credit Systerm- (CBCS)

सत्र 2018–19

Class : BPA III$_{rd}$ Year
Subject : Kathak Dance
Paper : Ist
Title of paper : भारतीय नृत्य का इतिहास, विकास एवं प्रयोगात्मक सिद्धांत (Bhartiya nratya ka itihas, vikas evam prayogathmak sidhhant)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1$_{st}$	1. कथक नृत्य का इतिहास एवं विकास क्रम 2. शास्त्रीय नृत्य शैली मणिपुरी नृत्य शैली का अध्ययन।	
Unit- IInd	1. कथक नृत्य के जयपुर घराने की शैलीगत विशेषताएं तथा घराने की परम्परा का अध्ययन। जीवनियाँ एवं कथक नृतय में योगदान– पं. सुन्दरप्रसाद, पं.– नारायण प्रसाद, पं. कुंदन लाल गंगानी। 2. शास्त्रीय नृत्य की शैली ओडिसी नृत्य का परिचयात्मक ज्ञान।	
Unit- IIIrd	1. आचार्य भरतमुनी रचित नाट्यशास्त्र के अनुसार भृकुटी भेदों का अध्ययन। 2. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार संयुक्त हस्तमुद्राओं (1 से 12 तक) श्लोक सहित ज्ञान।	
Unit- IVth	1. आचार्य भरतमुनी रचित नाट्यशास्त्र के अनुसार भाव एवं रस का अध्ययन। 2. नायक भेदों का विस्तारपूर्वक अध्ययन।	
Unit- Vth	1. कथक नृत्य में गुरू वंदना एवं भूमि प्रणाम का महत्व। 2. तीन ताल, झपताल (10 मात्रा) एवं सूलताल (10 मात्रा) के ठेकों की ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन लिपिबद्ध करना एवं इनमें सीखे गये बोलों को लिपिबद्ध करने की क्षमता।	

20-2-19

(8)

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम

Choice Based Credit Systerm- (CBCS)

सत्र 2018–19

Class : BPA III_{rd} Year
Subject : Kathak Dance
Paper : 2^{nd}
Title of paper : शाब्दिक परम्परा (Textual Tradition)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1_{st}	1. अभिनय किसे कहते हैं विस्तार से समझाइए। 2. आड़ा चौताल (14 मात्रा) तथा धमार (14 मात्रा) के तालों की ठाह, तिगुन, चौगुन लिपिबद्ध करने की क्षमता के साथ तालों में सीखे गये नृत्य के बोलों की लिपिबद्ध करने की क्षमता।	
Unit- II^{nd}	1. कथक नृत्य के घरानों की विशेषताऐं एवं परम्परा का विशिष्ट अध्ययन। 2. जीवनियां एवं कथक नृत्य में योगदानः– पं. जयलाल महाराज, पं. नारायण प्रसाद, पं. सुंदर प्रसाद, पं. कुंदनलाल गंगानी, पं. राजेन्द्र गंगानी, पं. तीरथराम आजाद	
Unit- III^{rd}	1. अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त हस्ता मुद्राओं का विनियोग सहित वर्णन मध्यकाल से वर्तमान काल तक कत्थक नृत्य के विकास का अध्ययन 2. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार चारी तथा भ्रमरी भेदों का अध्ययन।	
Unit- IV^{th}	1. अभिनय की परिभाषा एवं उसके चारों भेदों का अध्ययन। 2. कथक नृत्य में भाव पक्ष का महत्व	
Unit- V^{th}	1. आधुनिक समाज में नृत्य का स्थान 2. कथक नृत्य में परम्परा एवं प्रयोग	

नोटः– प्रथम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल – झपताल (10 मात्रा) एवं सूलताल (10 मात्रा)

संदर्भित पुस्तकें:–

1. भारतीय संस्कृति में कथक परपंरा (डॉ. मांडवी सिंह)
2. कथक दर्पण (स्व. श्री तीरथराम आजाद)
3. रायगढ़ में कथक (श्री कार्तिकराम जी)
4. कथक नृत्य शिक्षा भाग एक एवं दो (डॉ. पुरू दाधीच)
5. कथक कल्पद्रुम (डॉ. चेतना ज्योतिषी व्यौहार)
6. संगीत दर्पण (श्री दामोदर पंडित)
7. अभिनय दर्पण (श्री वाचस्पति गैरोला)
8. नटवरी नृत्यमाला (गुरू विक्रम)
9. कथक नृत्य (श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग)
10. कथक नर्तन (डॉ. विधि नागर)

20-2-19

11. कथक मध्यमा (डॉ. भगवानदास माणिक)
12. कथक नृत्य शिक्षा भाग–1 (डॉ. पुरू दाधीच)

प्रायोगिक– प्रदर्शन एवं मौखिक

Unit- 1st	1. तीन ताल में तिगुन व विभिन्न जाति के बोल, बन्दिशें तथा तिहाइयाँ करने का अभ्यास तत्कार के अंतर्गत लड़ी व चलन करने का अभ्यास।	
Unit- II[nd]	1. गत विकास– बिंदिया व छूट (ठाठ) 2. गतभाव– माखनलीला।	
Unit- III[rd]	1. सरस्वती वंदना पर भाव प्रदर्शन। 2. नाट्यशास्त्रानुसार भृकुटी भेदों का प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- IV[th]	1. झपताल (10 मात्रा) एवं सूलताल (10 मात्रा) में निम्नानुसार नृत्यः– पद संचालन, ठाठ, एकआमद, तीन तोड़े, एक परन, एक चक्करदार परन, एक तोडा, एक कवित्त दो तिहाई एवं तत्कार – ठाह दुगुन, तिगुन, चौगुन	
Unit- V[th]	पढन्त करने की क्षमताः– 1. झपताल (10 मात्रा) एवं सूलताल (10 मात्रा) की ठाह, दुगुन तिगुन एवं चौगुन। 2. प्रायोगिक में सीखी गयी सभी बन्दिशें।	

नोटः– तृतीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल–झपताल (10 मात्रा) एवं सूलताल (10 मात्रा)

अथवा

प्रायोगिक– प्रदर्शन एवं मौखिक

Unit- 1st	1. आड़ा (चौताल 14 मात्रा) अथवा (धमार 14 मात्रा) में और रूपक (7) मात्रा निम्नानुसार नृत्य पदसंचालन तत्कार की एकगुंन, दुगुन, तिगुन व चौगुन, ठाट, उठान एक आमद, तीन तोड़े एक परन, एक चक्कदार तोड़े, या परन, एक तिहाइयाँ, एक कवित्त एवं तत्कार।	
Unit- II[nd]	1. तीन ताल में उच्चस्तरीय प्रदर्शन	
Unit- III[rd]	1. गतनिकास–निकास/ठाट की गत व नाव की गत। पूर्व कक्षा में सीखी गई गतनिकास का विस्तृत प्रदर्शन। 2. गतभाव–गोवर्धन पूजा।	
Unit- IV[th]	1. कृष्ण वंदना पर भाव प्रदर्शन 2. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित "अभिनय दर्पण" के अनुसार संयुक्त हस्तों का श्लोक सहित प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- V[th]	पढन्त करने की क्षमताः– 1. आड़ा (चौताल 14 मात्रा) तथा (धमार 14 मात्रा) एवं रूपक तालों की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन।	

20-2-19

(10)

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
Choice Based Credit Systerm- (CBCS)
सत्र 2018–19

Class : BPA IVth Year
Subject : Kathak Dance
Paper : Ist
Title of paper : भारतीय नृत्य का इतिहास, विकास एवं प्रयोगात्मक सिद्धांत (Bhartiya nratya ka itihas, vikas evam prayogathmak sidhhant)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1st	1. कथक नृत्य में बनारस घराने की विशेषताऐं एवं घराने की परम्परा का अध्ययन। जीवनियां एवं कथक नृत्य में योगदान–पं. सुखदेव महाराज, पं. जानकी प्रसाद, विदूषी सितारा देवी, पं. गोपीकृष्ण, पं. कृष्ण कुमार। 2. शास्त्रीय शैली में कथकली एवं शास्त्रीय नृत्य का विस्तृत अध्ययन।
Unit- IInd	1. लोकधर्मी, नाट्यधर्मी एवं पूर्वरंग का अध्ययन। 2. देवदासी प्रथा का इतिहास एवं भारतीय नृत्यों के विकास में उसका योगदान।
Unit- IIIrd	1. अष्ट नायिका भेदों का विस्तृत ज्ञान। 2. ताल के दसप्राण का विस्तृत अध्ययन।
Unit- IVth	1. सोलह श्रंगार एवं बाहर आभूषणों की जानकारी एवं कथक नृत्य में उनके महत्व का ज्ञान व पाश्चात्य नृत्य कला का इतिहास। 2. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित "अभिनय दर्पण" के अनुसार दशावतार हस्तों का श्लोक सहित ज्ञान।
Unit- Vth	1. नाट्यशास्त्र के अनुसार 108 करण के नाम एवं प्रारंभिक 1 से 25 तक करणों का विस्तृत अध्ययन। 2. रासलीला की व्याख्या एवं विस्तृत अध्ययन।

20-2-19

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

(11)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
Choice Based Credit Systerm- (CBCS)
सत्र 2018–19

Class : BPA IVth Year
Subject : Kathak Dance
Paper : 2nd
Title of paper : शाब्दिक परम्परा (Textual Tradition)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : (Question paper = 80) + (Mid Term = 15) + (Attandance = 05) = Totel 100

Particulars/विवरण

Unit- 1st	1. कथक नृत्य के विकास में नवाब वाजिद अली शाह के योगदान का अध्ययन। 2. कथक नृत्य के विकास में राजा चक्रधर सिंह का योगदान।	
Unit- IInd	1. निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर दिये गये कथानकों पर नृत्य नाटिका की संरचना करने की संचना करने की क्षमता– कालिया दमन, शूर्पणखा, मानभंग कथानक, पात्र चयन, मंच व्यवस्था, वेशभूषा, रूपसज्जा, पार्श्व संगीत, ताल एवं रस। 2. प्रायोगिक पक्ष में सीखी गई बोल बंदिशों को लिपिबद्ध करना।	
Unit- IIIrd	1. पंचमसवारी (15 मात्रा) अथवा गजझंपा (15 मात्रा) तालों की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन लिपिबद्ध करने की क्षमता। 2. प्रायोगिक में सीखे गये नृत्य के बोलों की लिपिबद्ध करने की क्षमता।	
Unit- IVth	1. नाट्यशास्त्र के अनुसार स्थानक भेद। 2. नृत्य के उपकरण– मंच व्यवस्था, संगतकार, वेशभूषा, ध्वनिप्रकाश व्यवस्था।	
Unit- Vth	1. त्रिताल में एक तिहाई लिपिबद्ध कीजिए। 2. पंचम सवारी अथवा गजझंपा में एक आमद लिपिबद्ध कीजिए।	

संदर्भित पुस्तकें:–

1. भारतीय संस्कृति में कथक परपंरा (डॉ. मांडवी सिंह)
2. कथक दर्पण (स्व. श्री तीरथराम आजाद)
3. रायगढ़ में कथक (श्री कार्तिकराम जी)
4. कथक नृत्य शिक्षा भाग एक एवं दो (डॉ. पुरू दाधीच)
5. कथक कल्पद्रुम (डॉ. चेतना ज्योतिषी व्यौहार)
6. संगीत दर्पण (श्री दामोदर पंडित)
7. अभिनय दर्पण (श्री वाचस्पति गैरोला)
8. नटवरी नृत्यमाला (गुरू विक्रम)
9. कथक नृत्य (श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग)
10. कथक नर्तन (डॉ. विधि नागर)
11. कथक मध्यमा (डॉ. भगवानदास माणिक)
12. कथक नृत्य शिक्षा भाग–1 (डॉ. पुरू दाधीच)

20-2-19

(22)

प्रायोगिक– प्रदर्शन एवं मौखिक

Unit- 1_{st}	1. पूर्व में किये गये तालों की पुनरावृत्ति। 2. तीनताल में तोड़े एवं परन के साथ उच्चस्तरीय नृत्य प्रदर्शन।	
Unit- II^{nd}	1. गतनिकास–रूखसार एवं घुंघट के प्रकार 2. गतभाव–कालियादमन	
Unit- III^{rd}	1. राम स्तुति पर भाव प्रदर्शन। 3. गतभाव–गोवर्धन पूजा।	
Unit- IV^{th}	3. कृष्ण वंदना पर भाव प्रदर्शन 4. आचार्य नन्दीकेश्वर द्वारा रचित "अभिनय दर्पण" के अनुसार दशावतार हस्तों का प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- V^{th}	पढन्त करने की क्षमताः– 1. पंचम सवारी (15 मात्रा) तथा गजझंपा (15 मात्रा) की ठाह, दुगुन, व चौगुन। 2. प्रायोगिक में सीखे गये सभी बंदिशें।	

नोटः– चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल–आड़ा चौताल (14 मात्रा) तथा धमार (14 मात्रा)
पंचम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के ताल–पंचमसवारी (15 मात्रा) और गजझंपा (15 मात्रा)
पूर्वकक्षा में सीखी गई ताल एवं बंदिशों की पुनरावृत्ति।

20-2-17